समकालीन भारत और शिक्षा :⇒

विद्यालयी पाठ्यचर्या में समकालीन बदलावों को समझ

स्कूली शिक्षा के संदर्भ में पाठ्यचर्या संबंधी बहसों ने हाल-फिलहाल अकादमिक क्षे० में काफी रुचि पैदा की है, और कुछ विवादों को जन्म दिया है, इसे इस बात का सूचक माना जा सकता है कि स्कूली शिक्षा, खास कर इसकी गुणवत्ता से जुड़े पहलुओं को कितना महत्व दिया जा रहा है? शैक्षिक परिसरों और रणनीतियों के निर्माण में शिक्षण अधिगम के विषयवस्तु और तौर तरीके हमेशा से केन्द्र को महत्व के सवाल रहे हैं, फिर भी इस किस्म की बहस में न्यायप है और वह अहम भी है, शुरु में पाठ्यचर्या के नाम पर पाठ्यक्रम पर बहस होती थी और उसी का निर्माण किया जाता था, लेकिन अब इन दोनों के बीच स्पष्ट फर्क किया जाता है जो विविध मुद्दों के बारे में अलग-2 समझ का संकेतक है, जिनमें शिक्षा के उद्देश्य और व्यवहार के तरीके भी शामिल है, तथापि ये शिक्षण की प्रस्तावित विषयवस्तु से सरोकार रखते हैं अपनी स्थापना के थोड़े समय बाद ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद राष्ट्रीय पाठ्यचर्या किंवा पाठ्यक्रम निर्माण तथा पाठ्यपुस्तकों समेत शिक्षण सामग्रियों की तैयार की नोडल एजेंसी बनगया। कोठारी आयोग रिपोर्ट (1964-66) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) के कुछ वर्ष बाद राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने दसवर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यचर्या

एक रूपरेखा 1975 में प्रकाशित की और उसके बाद उच्च माध्यमिक शिक्षा तथा इसका व्यवसायीकरण (1976) का प्रकाशन किया। कोठारी आयोग की अनुशंसाओं के आलोक में 10+2 संरचना की पुनर्संरचना के अलावा क्रियाकलाप आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तथा क्रियान्वयन कार्यक्रम (1988) की रोशनी में प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या एक रूपरेखा तैयार की गई। इस दस्तावेज के आधार पर अनेक क्षेत्रों को बेहतर बनाया गया जिनमें अध्यापक शिक्षण विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा तथा समग्र और सतत मूल्यांकन शामिल है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने दूसरी पाठ्यचर्या वर्ष 2000 में तैयार की उसमें यह कहा गया कि: यह आम स्वीकृति की बात है कि शिक्षा में पाठ्यचर्या का नवीकरण और विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। और कोई भी सरकार इस मामले में ढिलाई नहीं बरत सकती है। पाठ्यचर्या ऐसी ही होनी चाहिए कि वह शिक्षार्थी की जरूरतों, सामाजिक अपेक्षाओं, सामुदायिक आकांक्षाओं और अन्तर्राष्ट्रीय तुलनाओं को संतुष्ट कर सके। इसके अलावा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तथा क्रियान्वयन कार्यक्रम (1992) की समीक्षा के तर्ज पर

प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या एक रूपरेखा की प्रकाशन के बाद से कोई समीक्षा (1977-2002) के दस्तावेज की सिफारिशें कर रही है।

वर्ष 2000 के दस्तावेज के प्रथम अध्याय में

प्रासंगिकता, समता और उत्कृष्टता को पाठ्यचर्या के तीन प्रमुख स्तम्भ बताते हुए इनके संदर्भ की व्याख्या की गई है और पाठ्यचर्या का खाका - बताया गया है। पिछली पाठ्यचर्या समीक्षा के ठीक पाँच वर्ष बाद राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सामने आई। इसने एक दूसरी रिपोर्ट: शिक्षा बिना बोझ के - की ओर ध्यान खींचा और पाठ्यचर्या की रूपाकृति का कुछ नया परिप्रेक्ष्य पेश किया इस प्रयास का औचित्य है।